शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 40908

विश्व स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करती किशनगढ़ चित्रशैली

डॉ० रीता सिंह
PDFWM (UGC)
ललित कला विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

सारांश

किशनगढ़ में अधिकांश राजा कवि, साहित्यकार, कलाकार और कला प्रेमी हुए। जिससे यहां की चित्रकला मे राधा–कृष्ण की लीलओं का अद्भुत और दिव्य भाव उभर कर आया है। किशनगढ़ चित्रशैली तभी तो विश्व फलक पर हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ये लघु चित्र अपने अंदर सागर की असीम गहराई को समेटे हुए है। यह देश काल की सीमाओं को पार कर देशी– विदेशी सभी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है।

किशनगढ़ शैली की चित्रकला में कुछ ऐसा रस है जिस कारण उसे विश्व प्रसिद्धि मिली हैं। जब किसी भी कला का आधार आध्यात्मिक होता है तो वह कला आन्तरिक सहजता का ही परिणाम होती है। किशनगढ़ की चित्रकला का भी मूलाधार धार्मिक और साहित्यिक था, तभी तो किशनगढ़ के चित्र विश्व पटल पर अपना महत्वपूर्ण स्थान आज भी बनाये हुए हैं। कोई भी सैलानी इन चित्रों को देखें बिना नही रह सकता ये स्वयं दर्शको को आकर्षित करते हैं। ''यही कारण है कि पूरी दुनिया के लोग इस धरती के दर्शनों के लिए प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में आते हैं। इनका आना अस्वाभिावित नहीं हैं। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसकी पुष्टि प्रतिवर्ष आने वाले प्रवासी पक्षियों से भी होती है। किशनगढ़ के चित्रकारों ने रंगो और रेखाओं का जादू इस प्रकार बिखेरा है कि दर्शक देखता रह जाता है। किशनगढ़ के चित्र प्रत्येक पर्यटक को आध्यात्मिक अनुभूति कराते हुए कलात्मक सौन्दर्यबोध का विकास करते है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ० रीता सिंह

विश्व स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करती किशनगढ़ चित्रशैली

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 57–60

Article No. 8
http://anubooks.com
?page_id=581

डॉ० रीता सिंह

कही न कही मानव के आध्यात्मिक जीवन से कलाओं की अभिव्यक्ति जुड़ी है और मानव की आत्मा का पोषक भी है। प्रागैतिहासिक काल थे जब भाषा का कोई निश्चित स्वरूप नहीं था, उस समय में कथ्य रेखाओं से प्रकट हुआ था। इसीलिए उन गिनी चुनी रेखाओं में काव्य भी था, बिम्ब भी थे, प्रतीक भी थे और भावाभिव्यक्ति भी थी। इस प्रकार चितेरों ने सर्वप्रथम अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की थी, आगे चलकर जैसे–जैसे भाष समृद्व होती गई, मानव का अनुभूत– छन्द काव्य में पूर्ण रूप से व्यक्त होता गया। चित्रकला भी रंग और रेखाओं की बारीकियों के साथ अपने अस्तित्व का विकास करती रही।1 सौन्दर्य सदैव अपनी आभा बिखेरता है। ''इतना ही नही, उसकी धार्मिक अभिव्यक्तियों और आध्यात्मिक प्रतीकों में भी 'सुन्दर' मंगल–दीप की भाँति जलता है। यह भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है।2

राजस्थान की विश्व प्रसिद्ध किशनगढ़ शैली के चित्रों में आध्यात्मिक भक्ति, काव्य, कला, संगीत का संयोजन और रंग– रेखाओं का लालित्य मुखरित हुआ है। राजस्थान की ललित संस्कृति प्रतिभासम्पन्न और गरिमामय है जो स्वयं सांस्कृतिक एकता का सूचक है और युगो से भारतीय परम्परा से जुड़ी रही है।3''ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान एक महत्वपूर्ण राज्य है। राजस्थान पर्यटको के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है।4

ज्ञानार्जन और शोधात्मक दृष्टि से पर्यटन महत्वपूर्ण है। यदि पर्यटक की दृष्टि शोधाात्मक और गूढ़ है तो वह कुछ न कुछ खोज ही लेता है। ''ऐसी ही दृष्टि ऐरिक डिकेन्स की थी। जो लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में अंग्रेजी साहित्य के व्याख्याता रहे और भारतीय संस्कृति के महान प्रंशसक होने के साथ–साथ यहाँ का रहन–सहन, ढीली–ढाली पोशाक को भी पहनने का आंनद उठाया एवम् भारतीय हिन्दी कविता को भी बहुत सराहा। वे सन् 1943 में जब मेयो कालिज, अजमेर में शैक्षणिक भ्रमण के लिए आये तो उन्होने किशनगढ़ राजघराने के चित्रकला के खजाने को देखा, जिनमे राजाओ की पेंटिग, व्यक्ति चित्र और सामान्य चित्र देख कर तो उनसे वे सम्मोहित हो गये।5 अगले ही वर्ष वे विधिवत् वहाँ की चित्रकला का अध्ययन करने के लिए आये और किशनगढ़ के चित्रों को देखकर अंचभित रह गये। विषय–वस्तु शारीरिक बनावट, रंग–संयोजन आदि की दृष्टि से ये चित्र अन्य शैलियों से विशिष्ट एवं अलग पाये गये। उन्ही के प्रयत्नों से राष्ट्रीय संग्रहालय में कुछ चयनित चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई और तभी से किशनगढ़ की चित्रकला की देश–विदेशो में ख्याति फैल गई और 6 पर्यटक इस कला के आकर्षण से प्रभावित होने लगे।

राजस्थान की चित्रकला का विकास दूसरी शैलियों के अनुरूप कुछ कलाकारों द्वारा एक ही स्थान पर नहीं किया गया, बल्कि राजस्थान के जितने प्राचीन, नगर राजधानियाँ धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठान हैं वहाँ चित्रकला पनपी और विकसित हुई। इसलिए राजाओं धर्माचार्यो दरबारी कवियों, मुसब्बिरो, संगीतज्ञो, शिल्पकारो, आदि के पारस्परिक आदान–प्रदान से राजस्थानी चित्रकला की अजस्रधारा को शैलियों, उपशैलियों को विकसित करती हुई 17 वी0–18 वी0 शदी में अने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जिससे इसका समन्वित स्वरूप सामने आयां इसके विराट परिवेश में अनेक शाखएँ और उपशाखाएँ समाविष्ट हो गई।7 राजस्थान के विभिन्न भागों पर मध्यकाल में राजपूत वीरो ने अपना अधिकार कर लिया। सम्पूर्ण भाग को अपने–अपने वशं या स्थान विशेष के अनुरूप नामों से प्रसिद्धि मिली

और उन्हे विविध राज्यों की संज्ञा दी गई।8 किशनगढ़ शैली अपनी धार्मिकता, कला, इतिहास, शासन सभी को अपनी अलौकि सौन्दर्य दृष्टि से निहारती हुई उच्च स्तर तक पहुँची। इन ऊँचाई तक पहुँचाने का कार्य महाराजा नागरीदास जी की कलम और निहालचन्द्र जी की तूलिका ने किया।

किशनगढ़ में अधिकांश राजा कवि, साहित्यकार, कलाकार और कला प्रेमी हुए। जिससे यहां की चित्रकला मे राधा–कृष्ण की लीलओं का अद्भुत और दिव्य भाव उभर कर आया है। किशनगढ़ चित्रशैली तभी तो विश्व फलक पर हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ये लघु चित्र अपने अंदर सागर की असीम गहराई को समेटे हुए है। यह देश काल की सीमाओं को पार कर देशी–विदेशी सभी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रतीत होता है कि किशनगढ़ के राजाओं को यहधार्मिक भावाना विरास्त में मिली थी यह चित्रशैली धार्मिक भावाना से ओत–प्रोत है। काव्य, चित्रकला और संगीत तीनो ललित कलाओं के कलात्मक वैभव से किशनगढ़ शैली को विकसित करने मे महाराजा नगरीदास का काव्य ओर निहाचन्द्र की चित्रकला का योगदान सर्वविदित है। पीढ़ियों से मिली भक्ति योग की साधना ने अपना रूप दिखाया। ''नागरीदास के कलात्मक व्यक्तित्व ने किशनगढ़ शैली को एक नवीन मोड़ दिया। उनमें रूप–सौन्दर्य के प्रति अपूर्व जिज्ञासा के साथ ही साथ भावुक हृदय की भक्ति भावना भी थी। नगरीदास राजा होते हुए भी राज्य लिप्सा से बहुत दूर रहे। भोगी होते हुए भी योगी की भाँति जीवन व्यतीत किया। किशनगढ़ शैली में प्राण फूँकने वाले नागरी दास महारसिक, भावुक कवि, कलामर्मज्ञ तथा राधा–माधव के युगल रूप के भक्त थे।9

कुमार स्वामी ने कहा है कि–''भारतीय जीवन दर्शन का अन्तिम छोर सहज है और वही सहज, मध्ययुगीन भक्ति साहित्य में बहुत ही विशिष्ट रूप में अंकित हुआ है वही सहज, मध्य–युगीन संगीत और चित्रकला में अंकित हुआ है। '' यही सहजता किशनगढ़ के चित्रों में स्पष्ट दिखई देती है। यह रूप आराधना द्वारा आराधक को पाने की वह चरम परिणति है जिस कारण किशनगढ़ के चित्र विश्व पटल पर अलग प्रतीत होते हैं।''

''नागरिक ने प्रियसी के रूप मे आरधना की इनके प्रति कविवर का आत्म विवेचन एक स्वस्थ काव्यधारा के रूप में प्रस्फुटित हुआ। जिसने चित्रकार को विषय वस्तु की काव्यमय पृष्ठभूमि तथा कल्पना एवं सौन्दर्य का विशाल''10फलक दिया। जिस पर चित्रकार निहालचन्द्र ने कवि नागरीदास और बणीठणी को प्रेरणा भाव से सामने आती हुई दिखाई गई है।, पीछे सखियों को पूजा सामग्री लिये हुए दिखाया गया है। इस चित्र ने सहजता का बाना पहने रंग और रेखओं में साक्षत् अध्यात्म को तूलिका के अद्भूत आघातों से अंकित कर सभी को भाव–विभोर कर दिया। चित्र की आध्यात्मिकताही सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है।

''श्री कृष्ण की अजस्र भक्तिधारा से सनी भक्त कवि नागरीदास की रसिकता एवंम् भावुकता से सम्पन्न ''बणीठणी'' के अनिद्य रूपा सौन्दर्य की प्रेरणा से पल्लवित विश्व प्रसिद्ध11 किशनगढ़ शैली की प्रसिद्ध कृति हैं जिसे ऐरिक डिकेन्स ने राजस्थान की '' मोनालिसा' कहा है। यही कृष्ण की राधा भी हैं नागरीदास जी ने आँखो को केवल आँखे न मानकर अपने इष्ट की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम माना है। इस शैली का कोई भी चित्र आप देखे सभी में आँखे भावपूर्ण आध्यातिमकता से भरी हुई हैं।

यही तो अपने देखने वालों को सम्मोहित करती है। इसी विशेषता के ही परिणामस्वरूप ''बणीठणी'' को राजस्थान की ''मोनालिसा'' कहा गया है। लियोनार्डो। की ''मोनालिसा'' रहस्यात्मक मुस्कान के कारण विश्व पटल पर सम्पूर्ण पर्यटकों को आज भी लुभाती है। विज्ञान से लेकर पोस्टर बेचने वालो के पास भी मोनालिसां का चित्र आसानी से मिल जायेगा। इसी प्रकार राजस्थान के चित्रो में ''बणीठणी'' का ही ऐसा चित्र है जो विश्व पटल पर अपनी आध्यात्मिकता और भावपूर्ण सात्विकता के कारण जगजाहिर है और यह चित्र सामान्य से सामान्य और विशिष्ट से विशिष्ट व्यक्ति के पास मिल जायेगा।

किशनगढ़ शैली की चित्रकला में कुछ ऐसा रस है जिस कारण उसे विश्व प्रसिद्धि मिली हैं। जब किसी भी कला का आधार आध्यात्मिक होता है तो वह कला आन्तरिक सहजता का ही परिणाम होती है। किशनगढ़ की चित्रकला का भी मूलाधार धार्मिक और साहित्यिक था, तभी तो किशनगढ़ के चित्र विश्व पटल पर अपना महत्वपूर्ण स्थान आज भी बनाये हुए हैं। कोई भी सैलानी इन चित्रों को देखें बिना नही रह सकता ये स्वयं दर्शको को आकर्षित करते हैं। ''यही कारण है कि पूरी दुनिया के लोग इस धरती के दर्शनों के लिए प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में आते हैं। इनका आना अस्वाभिवित नहीं हैं। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसकी पुष्टि प्रतिवर्ष आने वाले प्रवासी पक्षियों से भी होती है। 12 किशनगढ़ के चित्रकारों ने रंगो और रेखाओं का जादू इस प्रकार बिखेरा है कि दर्शक देखता रह जाता है। किशनगढ़ के चित्र प्रत्येक पर्यटक को आध्यात्मिक अनुभूति कराते हुए कलात्मक सौन्दर्यबोध का विकास करते है।

सन्दर्भ

1. *"काव्य और चित्रकला की समानान्तरता के विविध आयाम,–निराला और वॉनगों के सन्दर्भ में"*– –डॉ0 अन्नपूर्णा शुक्ला, (अप्रकाशित शोध ग्रंथ)
2. *"हमारी सौन्दर्य सम्पदा"*–डॉ0 हरद्वारीलाल शर्मा **पृष्ठ सं0–3**
3. *"सामाजिक नियन्त्रण व सामाजिक परिवर्तन"*––रविन्द्रनाथ मुखर्जी, **पृष्ठ सं0–105**
4. *"राजस्थान भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन,"*–डॉ0 भँवर लाल गर्ग एवं एवं डॉ0 आनन्द प्रकाश भारद्वाज, प्रथम संस्करण **2000**
5. *"किशनगढ़ पेंटिग"* – एम.ए. रन्धावा एवं डी0ए0 रन्धावा, **1980**
6. *"ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन पेंटिग"*– राजस्थान ट्रेडिशन" –कृष्णा चेतैन्य, **पृष्ठ सं–118**
7. *"राजस्थानी चित्रकला"*– डॉ0 जयसिंह नीरज, **पृष्ठ–9**
8. इम्पीरियल गजेटियर, **पृष्ठ सं0–01**
9. *"भारतीय चित्रकला और काव्य"*– डॉ0 श्याम बिहारी अग्रवाल, **पृष्ठ सं0–18,** प्रथम संस्करण **1996**
10. *"राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ"*– प्रेमचन्द्र गोस्वामी, **पृष्ठ सं0–32**, प्रथम संस्करण–**1972**
11. *"भारतीय कला के विविध स्वरूप"*– डॉ0 प्रेमचन्द्र गोस्वामी **पृष्ठ सं0 91**, प्रथम संस्करण **1997**
12. *"राजस्थान जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन (प्रथम खण्ड)"* कवर विवरण से,"– मोहन लाल गुप्ता, प्रथम संस्करण **2004**